

विभाग-A

- * नीचैना पुशनीना योग्य विकल्प पसंद् करी उतर लयी [4]
- (1) [A] गीर्वा
- (2) [B] उपसर्ग
- (3) [C] पुत्रः
- (4) [D] सन्निवेशः

24/10

- * नीचैना च्यानी ज्ञया भरी [3]
- (5) एविषा
- (6) स्वर्गतः
- (7) कूरः

- * क विभाग साची शि' विभाग बीडी. [3]
- (8) सामानाग संघ - ली
- (9) महाभारत - महर्षि वैश्यास
- (10) विष्णोः कृत्कता - निबंध

विभाग-B

* गधिचंडनी आहलाभागां अनुवाद करी. [4]

[11] आ अरलाना लाजकी निर्णय आवापानी एती, ज्याचाधीकी कुसली आपता कळु. "अथी अधिचि हीचि के वाही तरकवी भरी अधीवां अधाय पुगाली अधी पू वयीला ही वाज्य तरकवी मलीन मनीनकुं. दानयत्र नाना पू उरायीकुं ही. ज्याचाअचि अलकुं ही के आ जमीन वाहीना अधिकार्यां लागवायीली ही.

अथवा

[12] अवाचंलुव नामना मनुना पंशमां अंग नामनी राम वाही गयी. ले एयाळु अथी धर्मनिहड एती. लेने लेन नामनी पुत्रवयी. ले करे अथनी. अधधर्ममां अर्या-पर्या अडनार एती. लेले चडा, दान वगरे आकुर्मांनी निषेध करेती. लेले दुर्जनीनी साडार करी एती. अने अर्जनीनी अपमानित करी एती. [4]

* नीचैना गधिचंडनी आहलाभागां अनुवाद करी. [4]

[13] आ भारी हाथ अथैधर्यावाली ही. आ भारी हाथ अतिराय लाजयाम ही. आ भारी हाथ अधा अधाधि (रीगी)नी मराडाना अधीचि ही. आ भारी हाथ कल्याणवाही अथर्यावाली ही.

अथवा

[14] समथ आजी ल्यारै आड भाडिना धरतीअी ले नालीअी ह्ये नाकुं हकुं. लेने अुर्ये पीतनां डिलनी वडे हाडेवानी अड्यात करी. [4]

- [15] * नीचैनी गधिचंड वांची पुशनीना उतर लयी [4]
- (A) अय पुत्राः
- (B) अर अश्मभ्यं हितकारकम् अहिरम् उपद्रिगु इति
- (C) द, द, द - इति
- (D) अमनं कुरुते

* परिचय उत्तर।

[14] यथा वृद्धः तयो पुत्रः सदा प्रियस्कारावुभौ ।
यिना वृद्धं चरुं व्यज्यं पुत्रहीनं कुर्वते तयो ॥

[2]

विभाग-D

* नीचेना सुखीना और माहात्मनां स्यात्।

[4]

[15] न्यायाधीश कर्तुं "..... डिन्तु महिसुत विभागना आधिकारीस्य
स्यात्। विधीनां अर्थे नम भूडिसी ही तेनी उपर दयान आपहुं
अथै अस्तुतुं भागीस्य हीस्य। अस्तै न्याय स्वागत करवामां
स्यात्सी ही।

[16] वार्ता अस्तै हृषि, लक्षुयामन अने वीपीर-वठव

* अर्थ पिसार करे।

[17] अनुवादः - इमाडपी ललवार केना हावमां ही लेनुं दुर्जन रुं करी
राडिप धाम विनात कण्यामां थडैली अठिन नीतात
मिने व अमिलवाह अय ही।

- इमाशील व्याडितना हावमां इमाडपी ललवार ही अस्तै
दुष्ट भातास तेने कोरि पल नुकारुं नुकशान नहीपाडी

- धाम विनाती कण्यामां अथै अठिन पडी ही ती अठिन
अने व अमिलवाह अय ही। अस्तै इमाना गुण
अथै हरेके व्याडितना भुवनमां होयो भूष नरी ही।

विभाग-E

* परिचयात्मक नौध लपो।

[2]

[18] सामवेद

'साम' शब्दनी अर्थ वाच ही 'गीत' अथवा 'गान' सामवेदमां
'युधामिदि' मां अठिन, हविह, साम पुरेरे देवनां स्तुतिगान ही
अथने तेमां कुल 650 मंत्रां ही अथने उतराधिकमां 1225 मंत्रां
ही अथ वेदना मंत्रां संगीतनी अथनामां जोडेपेला ही सामवेद
अथ नाम अथवे ही तेमते गावा भारती मंत्रां संग्रह ही
आ मंत्रां गुण उस्मार अर्थवर्णने 'उदिनाता' उद्वेगनां अथवे
ही अथ गीत सामवेदनी भारतीय संगीतशास्त्रां के शास्त्रीय
संगीतकुं मूल भावामां अथवे ही।

[19] उपनिषद

उपनिषद शब्द उप+नि+सद् धातु परवी स्यात् ही तेनी अर्थ
गुरुनी पास निष्ठापूर्वक जैसीने ज्ञान अथामां आपहुं परगातकुं
ज्ञान अथवे वाच ही। उपनिषदी अथ भारतीय संस्कृतिये
यिदुसावेला आध्यात्मिकतात अमृतपूर्व आग ही उपनिषद
गुणो वेदिक आहृत्यना अथ लोकां आपता होवापी
वेदाना माने पल मलोता ही वेदाना अस्तै ज्ञाननी अथ

भारतीय भारतमा प्रथम अर्थ लेखी विश्वमंडल व्यापारमा लगेको बला
 भुव, जगत, आत्मा, परमात्मा जगती पिक्की पर यमायी करो. यमा
 गुरु विश्व मंडलीने 'उपनिषद्' कहेवामा आवती.

* न्याय समझवा

[२२] सुदि अहेले सुंद अर्थ सुधि अहेले सीय. सुंद अर्थ है. अर्थ सीय
 सुद्ध है. धुलमा जोवाही गयेली सुद्ध सीयेने कोधवा माटे कोधस्थूल
 अहेली हाथीनी सुंदनी उपयोग करी, ती अनुष्यनी अमा वहीवार
 हांसीपाम धने है. ल्यारी अमा न्याय वपराय है. जेमेके कोध साभय
 कोगी नीडाता रोगीने माटे तेनी हवा नली अरुणावा उपलब्ध है
 अमा साभय हवावी रोग मरी अय अमे हावा हां कोध वीध
 नीतानी अर्थतावी ते रोगी माटे माटे अर्थपरिकाननी वाग करीता
 ती लैहकना अलकारीनी वर्ये उपलसर्तु लाभ धनी अय है. तेवा
 ज्यारी कोडेड नाना काम करवा माटे माटे साधन वापर अनेहतां
 कार्यसिद्ध करी काडीनहि. ल्यारी ते अडितानी अर्थतानी
 अससकारक रोगी असाट काष्ठमा रथु करवा माटे अमा न्यायको
 प्रयोग वाय है.

[२३] उत्प्रेक्षा अलंकार
 अन्वावन्त अय उत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन वा। अर्थात् नुक्त अर्थे
 के प्रसृत वर्णनाय वस्तुनी तनी समान वस्तुना साथे ज्यारी
 अंभावना करवामा आवी है. ल्यारी ल्यां उत्प्रेक्षा अलंकार अने है
 जेमेके स्तोत्रां पिरिञ्जुः मुखपङ्कजानि अकृतानि ह्येषु इय पङ्कजानि
 अर्थात् स्त्रीयानां मुखकमल अनेके अहेलना अरुपानां नडीयेतां
 कमल हाय, तीम कोमलां हां) अही उपमेय - मुखनी (उपवान)
 कमल हाय अहेली अंभावना अय अमे काष्ठ वडे हरायपालां
 आवी है.

[२४] हांहां गातां - गातां अमुक अंतरि अटककु पडे है. तीने
 यति कहै है.

[२५] रूपकी - २ (अ)
 (१) प्रतिमानाटक
 (२) अतिमकेनाटक